SSLC MODEL EXAM 2022- HINDI - ANSWER KEY BY ANANDAKRISHNAN EDACHERI, GHS MUNNAD, KASARAGOD		
Qns	Answer Indicators	Score
1	टूटा पहिया	
2	मोरपाल	
3	अकाल के कारण	
4	चार्ली चाप्लिन	
5	लाल	
6	गंगी	
7	बूढा	
8	देर शाम तक	
9	कहानी	
10	साहिल ने पैन में स्याही भरवाने की इच्छा से उनमें बची स्याही को जमीन पर छिडक दिया । दुकान पहुँचने पर वहाँ स्याही नहीं थी। तब दुकानदार ने साहिल से ऐसा कहा ।दुकानदार ने इसलिए ऐसा कहा कि किसी वस्तु को मिलने की प्रतीक्षा में हमारे पास की वस्तु को छोड़ना मूर्खता है ।बिना सोच विचार करके कुछ नहीं करना चाहिए ।	
11	मैं + के	
12	प्रस्तुत पंक्तियाँ आधुनिक हिंदी के प्रमुख क वे श्री. राजेश जोशी की सुंदर कविता बच्चे काम पर जा रहे हैं से ली गई हैं। इसमें कवि बाल मज़दूरी पर तीखा प्रहार करते हैं । उपर्युक्त पंक्तियों में कवि कहते हैं कि बालश्रम के प्रति हमारा दृष्टिकोण चाहे कुछ भी हो, यह एक सच्चाई है कि दुनिया भर के कई छोटे- छोटे बच्चे काम पर जा रहे हैं। भूख या गरीबी ही इसका कारण है जो कुछ बच्चों को काम पर जाने केलिए विवश करता है। बचपन जिंदगी का वह समय है जब बच्चों को सारी परेशानियों और दुखों से बेखबर हो हँसना खेलना चाहिए। लेकिन खिलौनों और रंग- बिरंगी किताबों की दुनिया कुछ बच्चों के ही नसीब में है। कवि हमारे समाज की इस असमानता पर दुखी है। समाज की एक बड़ी समस्या को कविता के द्वारा प्रस्तुत करने में कवि को पूर्ण सफलता मिली है। कविता की भाषा अत्यंत सरल एवं हमें चिंतित करने की प्रेरणा देनेवाली है।	
13.	टूटा पहिया अपने महत्व की याद दिलाती है कि मैं रथ का टूटा हुआ पहिया हूँ, लेकिन मुझे नहीं फेंकना ।मुसीबत के अवसर पर अभिमन्यु केलिए टूटा पहिया कैसे उपयोगी बना उसी प्रकार आम जनता केलिए मानवीय मूल्य काम आएगा। इतिहास की सामूहिक गति सत्य और धर्म को छोडकर असत्य और अधर्म के मार्ग पर चलने लगती है। उस समय सत्य के पक्ष, आम जनता को अधार्मिक शक्तियों के विरोध करने में तुच्छ माननेवाले इस टूटा हुआ पहिया यानी मानवीय मूल्य का सहारा लेना पडेगा। यानी समाज में शोषण और असमत्व बढ़ते वक्त आम जनता को मानवीय मूल्यों का सहारा लेना पड़ता है।	

	यहाँ टूटा पहिया मानवीय मूल्य का प्रतीक है। मानवीय मूल्यों की शक्ति व्यक्त करनेवाली यह कविता हर तरह से बिलकुल प्रासंगिक तथा अच्छी है। कवि ने कविता में सरल भाषा का प्रयोग किया है, जिससे उन्हें अपने उद्देश्य कथन में पूर्ण रूप से सफलता मिली है।	
14.	गंगी मुंशी प्रेमचंद की मशहूर कहानी ' ठाकुर का कुआँ ' की नायिका है। वह निम्नजाति की मानी जाती है | उसके पति जोखू बीमार है |पीने के लिए पति को साफ पानी दे न पाने से वह परेशान होती है। ठाकुर के कुएँ से पानी लेने जाने पर जोखू उसे डाँटता है। लेकिन वह पीछे मुडनेवाली नहीं थी। रात को चुपके - चुपके वह ठाकुर के कुएँ से पानी लाने जाती है | अत्यधिक सावधानी से पानी लेते समय ठाकुर का दरवाज़ा खुलता है और गंगी वहाँ से बच जाती है। उसके विद्रोही दिल रिवाजी पाबंदियों पर चोटें करता है । वह अपने पति से बहुत प्यार करती है। वह जानती थी कि गंदा पानी पीने से बीमारी बढ जाएगी। लेकिन बेचारी अनपढ गंगी यह नहीं जानती थी कि पानी को उबालने से उसकी खराबी दूर होती है। इस प्रकार गंगी में एक गरीब, असहाय और सामाजिक कुरीतियों के खिलाफ विद्रोह करनेवाली स्त्री को हम देख सकते हैं ।	
15	माँ की आवाज़ — फुस फुसाहट में बदल गई । मैनेजर ने चार्ली को — स्टेज पर भेजने का हठ किया । दर्शक खुशी से — तालियाँ बजाने लगे ।	
16	नील माधव पांडा की फिल्म है ' आई एम कलाम ' । कलाम और रणविजय फिल्म के पात्र है । छोटू खुद अपना नाम ' कलाम ' रख लेता है।	
17	लोग गाते हैं | लोग गीत गाते हैं | लोग त्योहार में गीत गाते है | लोग फूलदेई के त्योहार में गीत गाते है |	
18.	मोरपाल : मै तो छाछ लाया हूँ | मिहिर :वाह छाछ , इसे खाए कितने दिन हुए? मोरपाल : तुम्हारे राजमा चावल मुझे बहुत स्वादिष्ट है | मिहिर : तुम्हारे सब्जी- चावल और छाछ भी बहुत बढ़िया है । मोरपाल : सच ! तो हम एक काम करें, आज से हर दिन खाना अदला- बदली करके खाएँ । मिहिर : ज़रूर ।आज से मेरे घर से लाते राजमा- चावल तुम खाओगे और तुम्हारे घर से लाते छाछ- चावल मैं | मोरपाल : सचमुच यह तो बडी खुशी की बात है। खेलने जाना है न ? जल्दी खाएँ ।	

	मिहिर : ठीक है |	
19.	नागार्जुन की एक छोटी सी कविता है अकाल और उसके बाद ।इस कविता की पहली चार पंक्तियों में अकाल की भीषणता का वर्णन और दूसरी चार पंक्तियों में कवि अकाल के बाद की खुशहाली का वर्णन करते हैं। बहुत दिनों तक पडे रहे लंबे अकाल का वर्णन करने केलिए कवि ' कई दिनों तक ' कई बार दोहराते हैं। इसी प्रकार कई दिनों के अकाल के बाद फिर आई खुशी का वर्णन करने के लिए कई दिनों के बाद का प्रयोग कवि दोहराते हैं। घर में कई दिनों तक खाने के अभाव में मनुष्य ही नहीं सभी निर्जीव वस्तुएँ बहुत विवश होते हैं।अकाल के भीषण समय में चुल्हे रो रहे हैं। अर्थात् कई दिनों तक चूल्हा ठंडा पड़ा रहा। घर की दीवारों पर छिपकलियाँ खाना न मिलने के कारण विवश होकर घूम रहे हैं। चूहे पराजित सा हो गये है। चक्की उदास है कि उसका कोई उपयोग नहीं है क्यंकि घर में दाने का अभाव है ।अभाव के कारण चूहा भूखा है। कानी कुतिया भी उदास होकर चक्की के पास सोई है। अकाल के बाद घर के भीतर दाना आने पर मनुष्य ही नहीं सभी जीव- जंतुओं और निर्जीव वस्तुओं में भी खुशी का अनुभव होते हैं।	
20.	तारीख . . . . . आज पाँचवीं कक्षा के रिज़ल्ट का दिन था। मैं और साहिल पास हो गए। मैं ने साहिल का और साहिल ने मेरा रिपोर्ट कार्ड देखा ।आखिरी बार एक दूसरे की चीज़ को छूते समय मेरी आँखें भर गयी । क्योंकि मैं कल से साहिल से मिल नहीं पाएगी। अगले साल वह अजमेर जाएगा। उसे घर से दूर एक होस्टल में अकेला रहकर पढना पडेगा। आज तक कितनी खुशी थी। बारिश के मौसम में साहिल के साथ बीरबहूटियों को खोजकर कितने बिताए ।कल से किसके साथ लंगडी टाँग खेलूँ ? जाते समय उसकी आँखें लाल थीं और उसमें पानी भर गया था। मेरा विश्वास है कि वह भी दुखी है। क्योंकि हमारी दोस्ती उतनी सख्त थी।	
21.		
22	स्थान :	

<table>
<tr><td></td><td>
तारीख : ... .
प्रिय मित्र
नमस्ते ।तुम कैसे हो ? परिवार सब कैसे हैं? मैं यहाँ ठीक हूँ।सकुशल मैं यहाँ पहुच गया ।
मैं इस पत्र के द्वारा भोपाल की यात्रा के अनुभव के बारे में बताना चाहता हूँ ।वास्तव में मेरा लक्ष्यस्थान भोपाल नहीं था।मैं मुंबई जा रहा था। मध्यप्रदेश के भोपाल स्टेशन में अविनाश मुझसे मिलने आया।अविनाश ने मेरा सूटकेस लेकर नीचे उतरा ।मेरे सामने और कोई उपाय नहीं था, सिर्फ उसके साथ चलना था।अविनाश के साथ भोपाल ताल में सैर करने काअनुभव विशेष आनंददायक है । नीम सर्दी थी ।भोपाल झील में एक मल्लाह था।नाम था जब्बार ।उनकी नाव में जो सैर हुई थी वह मजेदार थी।।मललाह एक अच्छे गायक थे।उनकी गज़लें सुनकर हम सब कुछ भूल गए । मैंने खूब आस्वादन किया ।अगर मौका मिल जाए तो जरूर एक दिन तुम भी भोपाल जाकर झील की सैर करो । अनोखा अनुभव मिल जाएगा ।
परिवारवालों से मेरा नमस्कार कहिए ।तुमसे फिर मिलने की प्रतीक्षा में ,
तुम्हारा मित्र
(हस्ताक्षर)
. मोहन राकेश

सेवा में
नाम ... ...
पता ... ...
</td><td></td></tr>
<tr><td>23</td><td>
स्थान : एक झोंपडी का भीतरी भाग
समय : दोपहर के बाद का समय
पात्र : गंगी और जोखू ।(गंगी 40 औरत, धोती और चोली पहनी है।जोखू 50 का आदमी, धोती और बनियन पहना है ।) प्यास से परेशान होकर जोखू कमरे की पलंग पर बैठा है।उसको गंगी पीने केलिए लोटे में पानी देती है।
संवाद
जोखू : बहुत प्यास लग रही है।थोडा पानी लाओ।-
गंगी : अभी लाती हूँ ।
जोखू : यह कैसा पानी तू यह पानी कहाँ से लायी ?
</td><td></td></tr>
</table>

	गंगी: गाँव के कुएँ से। कल ही लायी हूँ। क्या हुआ ? जोखू :मारे प्यास के पिया नहीं जाता। गला सूखा जा रहा है और तू सडा पानी पिलाए देती है ! गंगी :(लोटा नाक से लगाते हुए) हाँ बदबू है। मगर कैसे ? कल लाते समय बदबू नहीं थी। कोई जानवर कुएँ में गिरकर मरा होगा । जोखू :प्यास सह नहीं पाता। ला, थोडा पानी, नाक बंद करके पी लूँ। गंगी: मैं नहीं दूंगी, खराब पानी से आपकी बीमारी बढ जाएगी। मैं कहीं से दूसरा पानी लाकर देती हूँ। आप लेट जाइए । जोखू :दूसरा पानी ! कहाँ से लाएगी ? गंगी :ठाकुर और साहू के दो कुएँ तो हैं, क्या एक लोटा पानी न भरने न देंगे ? जोखू :हाथ- पाँव तुडवा आएगी। बैठ चुपके से। गंगी : आप चिंता मत कीजिए। मुझे पता है क्या करना है। जोखू :ठीक है ।तुम्हारी मर्जी। जल्दी वापस आना । (मन में साहस भरकर गंगी रस्सी और घडा लेकर ठाकुर के कुएँ की ओर निकल जाती है ।)	
24.	समाचार (चार्ली का पहला शो) माँ की आवाज़ फट. . . . . . बेटा बना शो मैन स्थान : लंदन के प्रसिद्ध थिएटर में पहली बार कदम रखा पाँच साल का बच्चा चार्ली ने स्टेज पर चमत्कार कर दिया। गाते वक्त अपनी माँ की आवाज को फटते देखकर मैनेजर के साथ वह स्टेज पर लाया गया। चार्ली निष्कलंकता से गा रहा था कि लोग प्रसन्न होकर स्टेज पर पैसा फेंकने लगे। बच्चा गाना बंद करके पैसे बटोरने लगा। इस व्यवहार ने हॉल को हँसीघर में बदल दिया। इसके बाद उसने दर्शकों से बातचीत की, नृत्य किया और अपनी माँ सहित कई गायकों की नकल उतारी। दर्शकों ने खुशी से तालियाँ बजाकर चार्ली का अभिनंदन किया। लोगों ने उसमें एक महान कलाकार को देख लिया था ।	

ANSWER KEY PREPARED BY: BY ANANDAKRISHNAN EDACHERI, GHS MUNNAD, KASARAGOD

Visit www.shenischool.in To Join our telegram Group click ttps://t.me/joinchat/VggdwFAM7Wwu